नालन्दा खुला विश्वविद्यालय

दशम दीक्षान्त समारोह

शनिवार, 30 जुलाई, 2016

के शुभावसर पर

महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति

श्री राम नाथ कोविन्द

का

अध्यक्षीय भाषण

नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो० रास बिहारी प्रसाद सिंह जी, राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान, चंडीगढ़ के निदेशक प्रो0 एम0 पी0 पूनिया जी, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो० आर० पी० उपाध्याय जी, इस विश्वविद्यालय के कुलसचिव (परीक्षा) डा० एस० पी० सिन्हा जी, संयुक्त कुलसचिव श्री ए० एन० पांडेय जी, कार्यकारी परिषद् एवं विद्या परिषद् के सदस्यगण, आमंत्रित अतिथिगण, शिक्षकगण, पदाधिकारीगण, शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण, आज के इस दीक्षान्त समारोह में उपाधि ग्रहण करने आए विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!

मुझे बहुत खुशी है कि आज नालन्दा खुला विश्वविद्यालय ने 'दसवें दीक्षान्त समारोह' का आयोजन किया है। दीक्षान्त समारोह किसी भी शिक्षार्थी के जीवन का अविस्मरणीय दिवस होता है। 'दीक्षान्त' का अर्थ पढ़ाई का अन्त नहीं है। बल्कि यह जीवन की लम्बी यात्रा का एक पड़ाव है। दीक्षान्त समारोह में जो प्रमाण–पत्र और 'मेडल' दिये जाते हैं, वे बताते हैं कि अभी तक आपने जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसके साथ अब आप वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार हैं। सफलता का यह उत्सव आपके लिए जितने आनन्द और गौरव का है, उतना ही आपके अभिभावकों, गुरुओं तथा उन सबके लिए भी है, जिन्होंने आपके जीवन को ज्ञानमय और सुखमय बनाने के लिए पूरे दिल से सहयोग दिया है। मैं आप सबको बधाई

देता हूँ और आपके सुखमय उज्ज्वल जीवन की कामना करता हूँ।

कुछ छात्र–छात्राओं को अपने विषय में सबसे अधिक अंक प्राप्त करने के लिए स्वर्ण–पदक प्राप्त हुए हैं। सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने के लिए कितनी कठिन साधना करनी पड़ती है, इससे सब अवगत हैं। इन स्वर्ण–पदक प्राप्तकर्त्ताओं को मैं अपनी शुभकामनाएँ और आर्शीवाद देता हूँ। मुझे विश्वास है–ऐसे ही दृढ़ संकल्प और कठिन परिश्रम से वे अपने जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ते रहेंगे। जिन छात्र–छात्राओं को इन परीक्षाओं में आशा के अनुरूप सफलता नहीं मिल सकी है, उन्हें निराश होने की जरूरत नहीं है। जीवन में उतार–चढ़ाव आते हैं, उनको आत्मविश्वास से स्वीकारने वाला ही आगे बढ़ता है। इतिहास साक्षी है, ऐसे महान् मनीषियों की लम्बी परम्परा भारत ही नहीं

विश्वभर में है, जिन्होंने असफलता के बावजूद अपने परिश्रम, साधना और चारित्रिक गुणों से अपने–अपने क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। राष्ट्रकवि दिनकर की यह पंक्ति सदा आपको प्रेरणा देती रहेंगी :–

'मानव जब जोर लगाता है,

पत्थर पानी बन जाता है।'

मैं आपसे यह कहना चाहूँगा कि अपना लक्ष्य महान् रखिए, अपनी ऊर्जा पर विश्वास रखिए और आगे बढ़ते रहिए। सफलता आपको अवश्य मिलेगी। मुझे यह बताया गया है कि आप सब ने नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के उच्चस्तरीय शिक्षण तथा कदाचारमुक्त परीक्षा में उत्तीर्ण होकर विशेष गौरव प्राप्त किया है। आपसे मेरी अपेक्षा होगी कि अपने अर्जित ज्ञान और परिश्रम से ऐसा कार्य करें, जिससे आपका अपना, अपने परिवार, समाज और राष्ट्र का कल्याण एवं

विकास सुनिश्चित हो सके। आप जिस पेशा को अपनाएँ, जो भी योजनाएँ बनाएँ या सपने देखें, उनमें समाज के अन्तिम पायदान पर खड़े मनुष्य को न भूलें, उस योजना में उसे भी शामिल करें और उसके कल्याण के लिए हर संभव प्रयास करें।

हमारे देश में शिक्षा को हमेशा महत्त्व दिया जाता रहा है। शिक्षा मनुष्य में आदर्श मूल्यों का विकास करती है, उसे अपने कर्त्तव्यों एवं अधिकारों का बोध कराती है तथा जीवन यापन करने के लिए आवश्यक कौशल सिखाती है। 21वीं शताब्दी ज्ञान आधारित शताब्दी है। आज के विश्व में सफलता के सोपान ज्ञान पर आधारित हैं। हमारे देश में विक्रमशिला एवं नालन्दा जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों का अस्तित्व ज्ञान, विद्या एवं शिक्षा के प्रति हमारे संकल्प को प्रदर्शित करते हैं। आज इस बात की आवश्यकता है कि हम

विश्व को नेतृत्व प्रदान करने के लिए ऐसे शिक्षित व संस्कारित व्यक्ति बनाएँ, जो न केवल कौशलपूर्ण हों, अपितु मूल्यों पर आधारित जीवन–पद्धति में विश्वास रखते हों। पिछले कुछ वर्षों में भारत में उच्च शिक्षा का तेजी से विस्तार हुआ है और अब उच्च शिक्षा राज्य क्षेत्र से बाहर निकलकर गैर–परम्परागत तथा निजी क्षेत्र में भी तेजी से बढ़ रही है। उच्च शिक्षा के इस विस्तार में केवल परम्परागत तरीके की शिक्षा ही महत्त्वपूर्ण नहीं है, अपितु गैर–परम्परागत शिक्षा, जैसे, दूरस्थ शिक्षा पद्धति का भी महत्त्व बहुत ही तेजी से बढ़ रहा है।

उच्च शिक्षा के समुचित विकास के लिए यह संकल्प लिया जाना चाहिए कि बिहार में उच्च शिक्षा में सकल–नामांकन–अनुपात में वृद्धि की जायेगी। इस व्यापक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए दूरस्थ शिक्षा एक

महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस संदर्भ में कुलपति महोदय ने बताया है कि उच्च शिक्षा को पिछड़े ग्रामीण स्तर तक पहुँचाने के उद्देश्य से प्रखण्ड स्तर पर भी अध्ययन केन्द्र खोले गये हैं। यह बहुत ही सराहनीय कदम है। मैं इसके लिए विश्वविद्यालय को साधुवाद देता हूँ।

दूरस्थ शिक्षा के विकास की यात्रा में कई पड़ाव आये और उसकी प्रकृति तथा स्वरूप में बदलाव ने उच्च शिक्षा के स्वरूप व प्रकृत्ति पर भी प्रभाव डाला है। आज परम्परागत शिक्षा की सर्वश्रेष्ठ संस्थाओं में खुली एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति का समुचित प्रयोग हो रहा है और दोनों प्रकार की शिक्षा अनौपचारिक प्रत्यक्ष शिक्षा तथा अनौपचारिक दूरस्थ शिक्षा को एक–दूसरे का सहयोग करने वाला माध्यम माना जा रहा है। आज यह दोनों पद्धतियाँ वैकल्पिक पद्धतियाँ न बनकर

एक–दूसरे की पूरक पद्धतियाँ बनती जा रही हैं।

आज चारित्रिक गुणों का परिवर्द्धन अनिवार्य है। आत्मानुशासन चरित्र–निर्माण की रीढ़ है। नैतिक मूल्य–मर्यादा से ही सामाजिक बुराइयों पर अंकुश लग सकता है। आपको गर्व होना चाहिए कि आप उस नालन्दा खुला विश्वविद्यालय से उपाधि ले रहे हैं, जहाँ CCTV रिकॉर्डिंग के माध्यम से पूर्णतया कदाचारमुक्त परीक्षा– प्रणाली सुनिश्चित की गई है। विश्वविद्यालय में नामांकन लेने के दिन ही विद्यार्थी को पता हो जाता है कि उसकी परीक्षा किस तिथि से होगी, उसकी परामर्श कक्षाएँ कब चलेंगी। इस विश्वविद्यालय में अंकपत्र, मूल प्रमाण–पत्र, विश्वविद्यालय परित्याग–पत्र आदि मांग के दिन ही उपलब्ध करा दिए जाते हैं। इस विश्वविद्यालय की विकास–कथा अनुकरणीय है। 29 वर्ष पूर्व

मात्र एक डिप्लोमा पाठ्यक्रम से प्रारम्भ हुए विश्वविद्यालय में आज एक सौ से अधिक पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं। लगभग दो दर्जन से बढ़कर विद्यार्थियों की संख्या अब डेढ़ लाख से भी अधिक है। यहाँ की तकनीकी शिक्षा उच्चस्तरीय है, कम्प्यूटर लैब और विज्ञान विषयों की प्रयोगशालाएँ उत्तम गुणवत्ता वाले उपकरणों से सुसज्जित हैं। कम्प्यूटरीकृत कार्यालय दूर–दूर तक फैले अपने विद्यार्थियों से संचार–विधि से निरन्तर सम्पर्क में रहता है। समय पर परीक्षा, निर्धारण तिथि को परीक्षाफल का प्रकाशन आदि अनेक विशेषताओं ने आपके विश्वविद्यालय को श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों की श्रेणी में पहुँचा दिया है। अपने सामाजिक दायित्व–निर्वहन में भी यह विश्वविद्यालय जागरूक है। जेल में कैदियों को निःशुल्क शिक्षा, स्त्रियों के लिए 25 प्रतिशत की आर्थिक छूट और विकलांगों को

विशेष सहायता सम्प्रति विश्वविद्यालय द्वारा दी जा रही है। ऐसे में आशा की जानी चाहिए कि आज के दीक्षान्त समारोह में डिग्री प्राप्त करने वाले विद्यार्थी भारत की इस गौरवशाली परम्परा का निर्वहन करेंगे और विश्व में खुली एवं दूरस्थ शिक्षा के परचम को लहरायेंगे।

इस अवसर पर मैं विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामना देता हूँ और आशा करता हूँ कि आने वाले समय में आप अपने उच्च नैतिक मूल्यों और प्राप्त गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बदौलत राष्ट्र–निर्माण में सशक्त और सार्थक भूमिका निभाएँगे।

अपने '10 वें दीक्षांत समारोह' के रूप में एक भव्य और सफल कार्यक्रम का आयोजन किया है, जिसके लिए कुलपति सहित समस्त नालंदा खुला विश्वविद्यालय परिवार धन्यवाद का पात्र है। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद। जय हिन्द ! .....

दसवाँ दीक्षान्त समारोह
कुलपति द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन

बिहार राज्य के माननीय महामहिम राज्यपाल सह कुलाधिपति, श्री राम नाथ कोविन्द जी, राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, चण्डीगढ़ के निदेशक प्रो० (डा०) एम० पी० पूनिया जी, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति, डॉ0 राम प्रकाश उपाध्याय जी, महामहिम के प्रधान सचिव श्री ई0एल0एस0एन0 बाला प्रसाद जी, कार्यकारी परिषद्, विद्या परिषद् एवं वित्त समिति के सभी उपस्थित सम्माननीय सदस्यगण, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के सभी उपस्थित पूर्व कुलपति महोदय, माननीय निदेशक, उच्च शिक्षा तथा शिक्षा विभाग के अन्य पदाधिकारीगण, बिहार के विभिन्न विश्वविद्यालयों के उपस्थित माननीय कुलपति महोदय, प्रतिकुलपति एवं कुलसचिव महोदय, विभिन्न विद्यापीठों के माननीय समन्वयक एवं शिक्षकगण, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय में स्वर्णपदक दाता परिवार के उपस्थित प्रतिनिधिगण, आमंत्रित अतिथिगण, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के कुलसचिव (परीक्षा), संयुक्त कुलसचिव, विश्वविद्यालय के सभी सतत् कार्यशील कर्मी, उपाधि प्राप्त करने वाले प्रिय विद्यार्थियों, मिडिया बन्धुओं, बहनों एवं भाईयों,

2. आज का दीक्षान्त समारोह, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय का 10वाँ दीक्षान्त समारोह है । इसमें वर्ष 2015 की परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों (इन्टरमिडियेट तथा सर्टिफिकेट कोर्स को छोड़कर) को उपाधि प्रदान की जायेगी । इस परीक्षा में कुल 18,771 विद्यार्थियों ने भाग लिया था, जिसमें 11,014 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए । इन उत्तीर्ण विद्यार्थियों में 45% छात्राएँ हैं । करीब 1200 विद्यार्थी आज उपस्थित हैं, जो स्वयं प्रत्यक्षतः इस यादगार अवसर पर उपाधि प्राप्त करेंगे । वे उत्तीर्ण विद्यार्थी जो किन्हीं कारणों से आज उपस्थित नहीं हो सके, उन्हें भी आज की मान्य तिथि से हीं उपाधि दी जायेगी ।
नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के लिए हर्ष का विषय है कि आज के दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता, माननीय राज्यपाल-सह-कुलाधिपति महोदय स्वयं कर रहे हैं । मुझे पूर्ण विश्वास है कि उनके आशीर्वचनों से उपाधि ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों को अपने जीवन में नई ताजगी एवं नई दिशा का अनुभव हो सकेगा ।

3. नालन्दा खुला विश्वविद्यालय अपने जीवन का 29वाँ बसंत पूर्ण कर चुका है । वर्तमान समय में 91 पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं, इनमें अनेक पाठ्यक्रम रोजगारोन्मुखी, व्यवसायिक और कौशल वृद्धि से सम्बन्धित हैं । आज

विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की कुल संख्या लगभग 1.5 लाख है । विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम 12 विद्यापीठों के अन्तर्गत चलाये जाते हैं ।

4. अगले सत्र, अर्थात् 2017 ई0 में कई नए पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की योजना है । इस संदर्भ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से मान्यता हेतु आग्रह भी किया गया है । हमने कुल 20 नए पाठ्यक्रमों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को लिखा है । जिनमें एम0ए0/एम0एसी0 आपदा प्रबंधन तथा गृह विज्ञान, बी0 एससी0 सांख्यिकी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स, बी0 ए0 उर्दू एवं मानव संसाधन प्रबंध में पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रमुख है । कम लागत पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हमारी प्रतिबद्धता है । इसका प्रमाण है कि नालन्दा खुला विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त छात्र-छात्राऐं बड़ी संख्या में केन्द्रीय तथा राज्य सरकार के प्रशासनिक सेवा में सफलता प्राप्त कर सके हैं । हमारे विद्यार्थी बैंकिंग सेवा, सूचना तकनिकी तथा शिक्षा के क्षेत्र में भी अपना परचम लहरा रहे हैं ।

5. बिहार राज्य में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सकल नामांकन अनुपात मात्र 13 प्रतिशत होने के कारण राज्य सरकार के विकास मिशन में सकल नामांकन अनुपात में वृद्धि को प्राथमिकता दी गई है । नालन्दा खुला विश्वविद्यालय द्वारा इसे एक चुनौती के रूप में लिया गया है । विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा निर्णय लिया गया है कि राज्य सरकार द्वारा चिन्हित निम्न सकल नामांकन अनुपात वाले 240 अति पिछड़े प्रखंडों में अध्ययन केन्द्रों की स्थापना तीन चरणों में की जायेगी । वर्तमान सत्र 2016-17 के लिए राज्य के 88 प्रखंडों के इन्टर कॉलेज अथवा +2 विद्यालयों में नये अध्ययन केन्द्रों की स्थापना की गई है । न सिर्फ केन्द्रों की स्थापना की गई है वरण ग्रामीण क्षेत्र में आम लोगों को इस बात के लिए परामर्श देने का भी प्रावधान रखा गया है कि वे अपने बच्चों को बिना कॉलेज या विश्वविद्यालय भेजे भी उच्च स्तरीय शिक्षा एवं रोजगारोपरक कौशल विकास हेतु नजदीक के अध्ययन केन्द्रों में नामांकन करा सकते हैं । इन्टर कॉलेज तथा +2 विद्यालयों के अतिरिक्त अनुमंडल स्तर पर 9 अंगीभूत कॉलेजों में भी नये अध्ययन केन्द्र खोले गए हैं । वस्तुतः पिछले एक वर्ष में अध्ययन केन्द्रों की संख्या में 190 प्रतिशत की वृद्ध हुई है ।

6. नालन्दा खुला विश्वविद्यालय में 2007 ई0 से महिलाओं को नामांकन के समय शुल्क राशि में 25 प्रतिशत की छूट दी जाती है । विश्वविद्यालय द्वारा महिला साक्षरता और सशक्तिकरण की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण प्रयास है । इस वर्ष नये अध्ययन केन्द्रों की स्थापना में भी महिला महाविद्यालय और लड़कियों के इन्टर कॉलेज एवं +2 विद्यालयों को प्राथमिकता दी गई है । हमारे इन प्रयासों का ही परिणाम है कि आज लगभग 50 प्रतिशत विद्यार्थी

छात्राएँ हैं और इस दीक्षान्त समारोह में कुल 28 स्वर्ण पदकों में से 21 स्वर्ण पदक लड़कियों को देने जा रहे हैं । हम स्नातक स्तर तथा स्नातकोत्तर स्तर पर सर्वाधिक अंक लाने वाली छात्रा को अलग से भी स्वर्ण पदक देते हैं ।

7. हम यह भी स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हमारे सभी स्वर्ण पदक (गोल्ड मेडल) 22 कैरेट शुद्ध सोने का बना होता है । मैं नहीं जानता कि भारत के किसी भी विश्वविद्यालय में पूर्णतः विशुद्ध 10 ग्राम सोने का गोल्ड मेडल दिया जाता है । हम सर्टिफिकेशन स्लिप के साथ प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को यह गौरव प्रदान करते हैं ।

8. हमारे विश्वविद्यालय द्वारा शोध एवं प्रकाशन के कार्य को भी गतिमान बनाया गया है । वर्तमान समय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मुक्त एवं दूरस्थ विश्वविद्यालयों में शोध हेतु नये दिशा-निर्देश का निर्माण किया जा रहा है । अतः तत्काल अनुसंधान कार्य स्थगित हैं । लेकिन 2009 दिशा-निर्देश के पूर्व पंजीकृत छात्र पी0एचडी0 डिग्री के लिए अधिकृत है । पूर्व के नियमों के अनुरूप कई छात्रों ने शोध कार्य पूरा किया है । हमारे यहाँ शोध कार्य के रेगुलेशन बहुत सख्त है, जिसके कारण बहुत हीं कम छात्र इस उपाधि को प्राप्त करने में सफल हुए हैं । विश्वविद्यालय द्वारा एक शोध प्रकाशन कमिटि का भी गठन किया गया है, इस कमिटि की अनुशंसा के आधार पर हम वैसे पुस्तकों को प्रकाशित करते हैं, जो अनुसंधान आधारित हैं तथा देश और समाज को नई दिशा दे सकता है । अभीतक कुल 12 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । विश्वविद्यालय द्वारा नैनो टेक्नोलॉजी, बुद्ध सर्किट तथा हिस्ट्री ऑफ पटना पर शोध हेतु विशेष राशि आवंटित किए गए हैं । बिहार के जनजातियों की विरासत और परम्परागत सांस्कृतिक अध्ययन हेतु भी शोध राशि स्वीकृत की गई है । विश्वविद्यालय द्वारा कैथी लिपि के संरक्षण के उपायों पर विचार करने हेतु एक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया था ।

9. नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के प्रतीक चिह्न में लिखे गए मंत्र “पावका नः सरस्वती” ऋग्वेद से लिया गया है, जिसका मूल अभिमंत्र है कि सभी विद्या की अधिष्ठात्री हमें ज्ञान एवं विद्या से भर दें । वस्तुतः विचार ही सभी कर्मों के बीज हैं । अतः माँ सरस्वती हमें सिर्फ अच्छे और शुद्ध बीज ही बोने का ज्ञान दें जिससे श्रेष्ठ फल प्राप्त होगा और हम बुद्ध और महावीर की पवित्र धरती से पुनः सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया तथा जीयो और जीने दो का मंत्र विश्व के कोने-कोने में फैला सकें ।

10. नालन्दा खुला विश्वविद्यालय अपने राष्ट्रीय और सामाजिक दायित्वों के प्रति भी सजग है । स्वामी विवेकानन्द के जन्म तिथि को न सिर्फ युवा दिवस

के रूप में मनाया गया वरण राज्य स्तर पर "युवा शक्ति एवं राष्ट्र निर्माण विवेकानन्द के संदर्भ में" विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया । इतना हीं नहीं, हमारे सभी कर्मियों ने आगे बढ़-चढ़ कर शराब बंदी अभियान को सफल बनाने हेतु एक कार्यक्रम में शराब न पीने की सामूहिक शपथ ली है । गुणवत्तापूर्ण और कदाचार मुक्त परीक्षा भी हमारी नैतिक जिम्मेवारी है । इस दिशा में भी विश्वविद्यालय द्वारा कई कार्यशाला का आयोजन किया । अध्ययन केन्द्र के समन्वयकों को नयी तकनीकि ओर चुनौतियों का सामना करने के लिए 30 मार्च, 2016 को कार्यशाला का आयोजन किया गया । माननीय महामहिम द्वारा इसका उद्घाटन किया गया तथा श्री एन0 के0 सिंह, सचिव, ब्राडकास्ट्र्स एसोशिएशन ऑफ इंडिया द्वारा "Role of Media in the Management of Study Centres" पर सारगर्भित विचार व्यक्त किया गया । हमारी परीक्षाएँ पूर्णतः कदाचार मुक्त है । हम प्रतिदिन 3000 छात्रों की परीक्षा, सीसीटीवी कैमरे युक्त परीक्षा भवन में कराते हैं, फिर भी, इसकी गुणवत्ता में सुधार हेतु भी एक कार्यशाला का आयोजन 13 मार्च, 2016 को किया गया जिसमें तमिलनाडु ऑपन युनिवर्सिटी के परीक्षा विशेषज्ञ, मो0 जफर द्वारा विचार व्यक्त किये गये । पुनः 03.07.2016 को भी परीक्षा में सुधार हेतु एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें महामहिम तथा शिक्षा मंत्रीजी द्वारा भी विचार व्यक्त किये गये ।

11. पिछले एक वर्ष में और भी कई उपलब्धियों हासिल की गयी है । आज पहली बार नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में कुलगीत गाया गया है । इसकी रचना कवि, सत्यनारायण जी ने की है तथा संगीत दिया गया है, डॉ0 रीना सहाय द्वारा । पुनः स्टूडेंट सपोर्ट सिस्टम को आई0सी0टी द्वारा अधिक कारगर बनाने के लिए नालन्दा खुला विश्वविद्यालय द्वारा एन्डरॉयड प्लेट फार्म पर मोबाईल ऍप की सुविधा उपलब्ध करायी गयी है जिसे कोई भी गुगल प्ले स्टोर पे जाकर डाउनलोड तथा इन्सटॉल कर सकते हैं ।

12. मित्रो, अभी तक यह विश्वविद्यालय, बिस्कोमान भवन अर्थात् कैम्प मुख्यालय से चल रहा है, लेकिन राज्य सरकार के सहयोग से नालन्दा में 10 एकड़ भूमि उपलब्ध करायी जा चुकी है । इसी वर्ष निर्माण कार्य प्रारंभ होने की संभावना है । इससे विश्वविद्यालय को अपना प्रांगण प्राप्त हो जायेगा और शैक्षणिक गतिविधियों में निश्चित रूप से गुणात्मक एवं मात्रात्मक वृद्धि होगी ।

13. उपस्थित महानुभावों को यह बताते हुए मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है कि इस वर्ष 18 से 20 नवम्बर के बीच, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के इतिहास में पहलीबार एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार का भी आयोजन किया जा रहा है । विषय का शीर्षक है, "Changing Nature of Water Resource : A Challenge Before

Mankind", इसमें जापान, दक्षिण अफ्रीका, यू0एस0ए0, बंग्लादेश और नेपाल से प्रतिनिधियों के आने की संभावना है ।

14. आइये, आज के 10वें दीक्षान्त समारोह में हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि हमारे विद्यार्थी निम्नांकित हितोपदेश के अनुरूप अपने को ढाल सकें -

"विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम ।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम् ।।"

अर्थात् विद्या से विनय, विनय से आदर्श पात्रता, आदर्श पात्रता से धन और धन से सुख की प्राप्ति करें । दुनियाँ के जिस किसी कोने में जाएँ, अपने आचरण और कर्म से नालन्दा खुला विश्वविद्यालय का नाम रौशन करें ।

15. अब मैं अपने विशिष्ट अतिथिगण, आमंत्रित मेहमान और प्यारे विद्यार्थियों को शुभकामना देते हुए उपाधि पत्र अधिकरण कार्यक्रम को आगे बढ़ाना चाहता हूँ। इसी के साथ मैं माननीय महामहिम राज्यपाल और प्रो0 पुनिया के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अपनी व्यस्तता के बावजूद हमारे 10वें दीक्षान्त समारोह में शिरकत करने की कृपा की है । आपके आशीर्वचनों से हमारे विद्यार्थी निश्चित रूप से लाभान्वित होंगे । उपाधि ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों को मैं विनम्र सलाह देता हूँ कि वे कार्यक्रम के अन्त तक अपने जगह पर शान्तिपूर्ण बैठे रहें तथा निर्देशानुसार उपाधि अधिकरण कार्यक्रम में सहयोग करें। इससे आपकी ही प्रशंसा होगी । अंत में मैं एक बार पुनः सभी को शुभकामनाएँ देता हूँ ।

धन्यवाद !

ꕥ ꕥ ꕥ

SPEECH BY THE Dr. M P POONIA, DIRECTOR, NITTTR, CHANDIGARH ON 10th ANNUAL CONVOCATION OF NALANDA OPEN UNIVERSITY, PATNA on 30.7.2016

Respected His Excellency Hon'ble Governor of Bihar and Chancellor, Nalanda Open Univesity, Shri Ram Nath Kovind ji ;
Hon'ble Vice Chancellor, Prof.(Dr.) Raas Bihari Prasad Singh ji ;
Dr. Ram Parksh Upadhayay, Pro Vice Chancellor, Nalanda Open University ;
Dr. E.L.S.N Bala Prasad, Principal Secretary to Hon'ble Governor of Bihar ;
Dr. SP Sinha, Registrar, Nalanda Open University and
Shri Amarnath Pandey, Joint Registrar, Nalanda Open University ;

Dear Students, their parents and all the audience present in this auspicious function.

Good Morning to all of you

1. I am happy to join you for this 10TH Annual Convocation of **NALANDA OPEN UNIVERSITY, PATNA**

Indeed, it is my great pride to be with you in Bihar state, the very significant and historic state of our country. As far as **history of Bihar** is concerned, it was known as Magadha, the centre of power, learning, and culture in India for 1000 years. Its capital Patna, earlier known as Patliputra, was an important political, military, and economic centre of Indian civilisation during the ancient and classical periods of history. Many of the ancient Indian text, written outside of the religious epics, were written in ancient Bihar

2. Nalanda Open University is the only University in the State of Bihar meant for imparting learning exclusively through the system of distance education. The University was established in March, 1987 by an ordinance, promulgated by the Government of Bihar. Later, Nalanda Open University Act, 1995 was passes by the Bihar Legislature, replacing the Ordinance, and

the University came under the authority and jurisdiction of the new Act automatically. The University is named after the famous Nalanda University of Ancient India. At present, the University is functioning from its camp office at Biscomaun Bhawan, Patna. The University is recognised by the Distance Education Council (DEC), University Grants Commission, and Ministry of HRD, Government of India for imparting education through distance mode. For the last couple of years, Nalanda Open University is providing educational opportunities to all for acquiring knowledge and skills in various fields of learning as per the need of the present day scenario. On the other hand, Nalanda Open University is laying emphasis on vocational as well as conventional courses leading to award of degrees and certificates. University create awareness for self-sufficiency and equip students by enhancing their knowledge and higher qualification to enable them to become suitable for new job opportunities and good entrenpreneurs. It is also worth mentioning that Nalanda Open University provide courses for rural, agricultural, industrial and commercial needs of people and design learning material for improving socio-economic condition of the masses and bring awareness in women, children and down-trodden of their social rights, duties and legal status in society.

Dear Students:

3. Convocation is a red-letter event for any academic institution. It holds great significance and underlines a true milestone in the life of its students and even teachers. It is a day when the fruit of years of hard work and determination is recognized. You will leave the holy grounds of this institute with the armoury of knowledge and strength of character.

4. I congratulate all those who are receiving degrees today. You are entering in the real world of work where modern, competitive economy needs workers who possess skills, knowledge and attitudes. They can take to any work situation and have the ability and willingness to continually adapt and prosper in a changing world. My dear students, Go to the world outside;

make a difference; touch and transform the lives of people around you, and create a happier universe

Friends:

5. The purpose of universities exists to drive forward the boundaries of knowledge, and aim to encourage intellectual curiosity in their graduates. Employers must also take some responsibility for training the graduates they recruit. Many graduates will enter the workplace at a young age and will not yet be fully formed individuals.

6. Education separates light and darkness; advancement from backwardness; excellence from mediocrity. If one investment can truly define a delicate linkage to future progress, it is education. If India has to be one of the front ranking nations in the world, the way ahead is only through a robust education system.

7. India has a sizeable number of young people, with two-third of the population below 35 years of age. Their grooming is essential as they are our future. Enrolment in higher education is below 20 per cent in India. Recognizing that this is not enough and may drag down the potential of our future generation, rapid strides have been made to expand the higher education infrastructure.

8. Yet, if we undertake an honest analysis of the state of higher education in our country today, it is easy to work out that many higher academic institutions lack the quality to produce graduates for the global market. I want our institutions to build up on the micro-level successes and rise from our sleep and beat the inertia that defines our current state of functioning.

Friends:

9. Faculty is the foundation of education system. The quality of teachers is a picture of the educational standards. Several measures are required for faculty development. The vacant teacher positions have to be filled up on

priority. Talented faculty from different parts of the country have to be hired to inject new thinking and diversity in academic approach.

10. Many ills that badly affect efficient functioning of our institute branch from the lack of good governance practices. Governance structures have to promote faster and transparent decision-making. In this context, the induction of reputed alumni into the governance mechanism could provide the dynamism that our institutions are often in short supply of. Alumni expertise can also be drafted to review existing courses and introduce new ones.

11. A concerted effort has to be made to develop a wide-ranging partnership with the industry. An institutional arrangement for industry-academia interface is essential to explore the contours of collaboration like sponsorship of research endowments and chairs, and conduct of internship programmes.

12. Institute shall make effective use of technology-based media for greater academic exchange which is the need of the hour.

Friends:

13. The research neglect in our universities has to be reversed. We have to adopt a multi-disciplinary approach in our academic system as most research activity requires the meeting of minds from diverse disciplines. We have to concentrate on the unique features of the region in which a university is located. Nalanda Open University shall prioritize its research expertise keeping in mind the need of the society.

14. Our universities have a duty to create curiosity and promote scientific temper amongst their students. A way forward could be to give wings to the ingenuous ideas of students and grassroots innovators. Novel ideas that can be nurtured into viable products deserve mentoring by the universities. An

initiative taken in several central universities is the setting up of Innovation Clubs.

15. I call upon the youth of to join hands with the youth of the rest of the country in forging the future of our nation. India is today a nation on the move. In every field of activity – be it business, industry, trade, education or culture, our billion plus people are marching strongly forward led by the ideas, project and energy of our primarily young population.

Friends:

16. India is on the threshold of new opportunities and higher achievements. You, the educated youth of our country, will build this resurgent new India. Use the education you have received here to become the change-agents in society. Draw inspiration from the words of Mahatma Gandhi who said and I quote: "***Essence of education lies in drawing out the very best that is in you"*** .

17. I wish Nalanda Open University family of great success in the years ahead and to all of you the very best wishes.

Thank you.

Jai Hind.